University of Rajasthan
Jaipur

SYLLABUS

(Three/Four Year Under Graduate Programme)

(B.A. -Rajasthani)

III & IV Semester

Examination-2025-26

अतिरिक्त कुलसचिव
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

बी.ए. – तृतीय सेमेस्टर (राजस्थानी)

प्रश्न पत्र – **मध्यकालीन राजस्थानी काव्य**

1 क्रेडिट – 25 अंक

6 क्रेडिट – 150 अंक

प्रश्न पत्र – 120 अंक

आंतरिक मूल्यांकन – 30 अंक

उद्देश्य (Objectives)

- विद्यार्थियों की राजस्थानी भाषा एवं साहित्य में अभिरूचि जाग्रत करना।
- विद्यार्थियों को मध्यकालीन राजस्थानी कवियों एवं उनके काव्य से परिचित करना।
- मध्यकालीन काव्य के इतिहास (विकास एवं परम्परा) से अवगत करना।
- काव्यशास्त्र (छंद, अलंकार, शब्द शक्ति, काव्यगुण, भाषागत सौन्दर्य) की जानकारी प्रदान करना।
- विद्यार्थियों में संवेदनात्मक अनुभूति की अभिवृद्धि करना।

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcomes)

- राजस्थानी भाषा एवं साहित्य में अभिरुचि विकसित होगी।
- मध्यकालीन राजस्थानी काव्य, इतिहास, कवि एवं प्रमुख कृतियो की रचनाधर्मिता से परिचित हो सकेंगे।
- मध्यकालीन राजस्थानी काव्य का अर्थ ग्रहण करते हुए विश्लेषण कर सकेंगे।
- काव्य की संवेदना में सहायक शिल्प का विवेचन कर सकेंगे।
- मध्यकाल के राजस्थानी काव्य में शोध की नई सम्भावनाओं को समझ सकेंगे।

अतिरिक्त क[illegible]
[illegible] विश्वविद्यालय, जयपुर

प्रश्न पत्र का अंक विभाजन

प्रश्न पत्र तीन खण्डों (अ,ब,स) में विभक्त है।

- खण्ड 'अ' के अन्तर्गत प्रश्न संख्या 1 अतिलघूत्तरी प्रश्न हैं जिसमें सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से 10 प्रश्न पूछे जाऐंगे। प्रत्येक प्रश्न 02 अंक का होगा।
- खण्ड 'ब' के अंतर्गत प्रश्न संख्या 2,3,4,5 सप्रसंग व्याख्या का है: जिसमें इकाई 2 से दो अवतरण तथा इकाई 3 एवं इकाई 4 में निर्धारित पाठ से एक एक अवतरण आंतरिक विकल्प सहित व्याख्या हेतु पूछे जाऐगे। प्रतेक प्रश्न 10 अंक का होगा।
- खण्ड–'स' के अन्तर्गग प्रश्न संख्या 6,7,8,9 निबन्धात्मक प्रश्न है: जिसमें प्रत्येक इकाई से एक–एक प्रश्न, आन्तरिक विकल्प सहित पूछा जाएगा। प्रत्येक प्रश्न 15 अंक का होगा।

इकाई – 1

मध्यकालीन राजस्थानी काव्य का इतिहास : पृष्ठभूमि, विकास एवं परम्परा

मध्यकालीन राजस्थानी काव्य रूप: महाकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तक काव्य का परिचयात्मक अध्ययन

इकाई–2

हाला झालाँ री कुण्डलिया : कवि ईसरादास (सम्पादक–डॉ. मोतीलाल मेनारिया, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर)

कुण्डलियाँ संख्या 01 से 50 तक

इकाई–3.

राजिया रा दूहा: कवि किरपाराम (सम्पादक–नरोत्तमदास स्वामी, सस्ता साहित्य मण्डल, बीकानेर)

दूहा संख्या 01 से 50 तक

इकाई – 4.

राजिया रा दूहा : कवि किरपाराम (सम्पादक – नरोत्तमदास स्वामी, सस्ता साहित्य मण्डल, बीकानेर,

दूहा संख्या 80 से 130 तक

आन्तरिक मूल्यांकन हेतु किन्हीं दो विषयों पर निबन्ध लेखन (2X15=30)

(नोट: विषय उपर्युक्त पाठ्यक्रम से सम्बन्धित होंगे)

अतिरिक्त कुलसचिव
विश्वविद्यालय, ज...

संभावित विषय

- मध्यकालीन राजस्थानी काव्य की सामान्य प्रवृत्तियों, परम्परा वं विकास
- हालाँ झालों री कुण्डलिया का भाव एवं कलापक्ष (संवेदना शिल्पगत अध्ययन)
- श्रीईसरदासः कवि परिचय एवं काव्यकला
- राजिया रा दूहा का भाव एवं शिल्पगत अध्ययन
- किरपाराम : कवि परिचय एवं काव्यकला

अनुशंषित ग्रन्थ :–

1. हालाँ झालाँ री कुण्डलिया : ईसरदास, सं.डॉ. मोतीलाल मेनारिया, राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर।
2. राजिया रा दूहाः किरपाराम. सं. नरोतनदास स्वामी, प्रकाशक सस्ता साहित्य मण्डल, बीकानेर।
3. राजस्थानी भाषा एवं साहित्य : मोतीलाल मेनारिया, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
4. राजस्थानी भाषा एवं साहित्य का इतिहासः सीताराम लालस, राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर
5. राजस्थानी काव्य की गौरवपूर्ण परम्परा : अगरचन्द नाहटा
6. परम्परा (शोध पत्रिका), राजस्थानी मध्यकाल विशेषांक –राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी जोधपुर।

अतिरिक्त कुलसचिव
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

बी.ए. – तृतीय सेमेस्टर (राजस्थानी)

प्रश्न पत्र – मध्यकालीन राजस्थानी काव्य

1 क्रेडिट – 25 अंक

6 क्रेडिट – 150 अंक

प्रश्न पत्र – 120 अंक

आंतरिक मूल्यांकन – 30 अंक

उदेश्य (Objectives)

- विद्यार्थियों की राजस्थानी भाषा एवं साहित्य में अभिरूचि जाग्रत करना।
- विद्यार्थियों को मध्यकालीन राजस्थानी कवियों एवं उनके काव्य से परिचित करना।
- मध्यकालीन काव्य के इतिहास (विकास एवं परम्परा) से अवगत करना।
- काव्यशास्त्र (छंद, अलंकार, शब्द शक्ति, काव्यगुण, भाषागत सौन्दर्य) की जानकारी प्रदान करना।
- विद्यार्थियों में संवेदनात्मक अनुभूति की अभिवृद्धि करना।

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcomes)

- राजस्थानी भाषा एवं साहित्य में अभिरुचि विकसित होगी।
- मध्यकालीन राजस्थानी काव्य, इतिहास, कवि एवं प्रमुख कृतियो की रचनाधर्मिता से परिचित हो सकेंगे।
- मध्यकालीन राजस्थानी काव्य का अर्थ ग्रहण करते हुए विश्लेषण कर सकेंगे।
- काव्य की संवेदना में सहायक शिल्प का विवेचन कर सकेंगे।
- मध्यकाल के राजस्थानी काव्य में शोध की नई सम्भावनाओं को समझ सकेंगे।

प्रश्न पत्र का अंक विभाजन

प्रश्न पत्र तीन खण्डों (अ,ब,स) में विभक्त है।

- खण्ड 'अ' के अन्तर्गत प्रश्न संख्या 1 अतिलघूत्तरी प्रश्न हैं जिसमें सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से 10 प्रश्न पूछे जाऐंगे। प्रत्येक प्रश्न 02 अंक का होगा।
- खण्ड 'ब' के अंतर्गत प्रश्न संख्या 2,3,4,5 सप्रसंग व्याख्या का है: जिसमें इकाई 2 से दो अवतरण तथा इकाई 3 एवं इकाई 4 में निर्धारित पाठ से एक एक अवतरण आंतरिक विकल्प सहित व्याख्या हेतु पूछे जाऐगे। प्रतेक प्रश्न 10 अंक का होगा।
- खण्ड–'स' के अन्तर्गग प्रश्न संख्या 6,7,8,9 निबन्धात्मक प्रश्न है: जिसमें प्रत्येक इकाई से एक–एक प्रश्न, आन्तरिक विकल्प सहित पूछा जाएगा। प्रत्येक प्रश्न 15 अंक का होगा।

इकाई – 1

मध्यकालीन राजस्थानी काव्य का इतिहास : पृष्ठभूमि, विकास एवं परम्परा

मध्यकालीन राजस्थानी काव्य रूपः महाकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तक काव्य का परिचयात्मक अध्ययन

इकाई–2

हाला झालाँ री कुण्डलिया : कवि ईसरादास (सम्पादक–डॉ. मोतीलाल मेनारिया, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर)

कुण्डलियाँ संख्या 01 से 50 तक

इकाई–3.

राजिया रा दूहाः कवि किरपाराम (सम्पादक–नरोत्तमदास स्वामी, सस्ता साहित्य मण्डल, बीकानेर)

दूहा संख्या 01 से 50 तक

इकाई – 4.

राजिया रा दूहा : कवि किरपाराम (सम्पादक – नरोत्तमदास स्वामी, सस्ता साहित्य मण्डल, बीकानेर,

दूहा संख्या 80 से 130 तक

आन्तरिक मूल्यांकन हेतु किन्हीं दो विषयों पर निबन्ध लेखन (2X15=30)

(नोटः विषय उपर्युक्त पाठ्यक्रम से सम्बन्धित होंगे)

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

संभावित विषय

- मध्यकालीन राजस्थानी काव्य की सामान्य प्रवृत्तियों, परम्परा वं विकास
- हालाँ झालों री कुण्डलिया का भाव एवं कलापक्ष (संवेदना शिल्पगत अध्ययन)
- श्रीईसरदासः कवि परिचय एवं काव्यकला
- राजिया रा दूहा का भाव एवं शिल्पगत अध्ययन
- किरपाराम : कवि परिचय एवं काव्यकला

अनुशंषित ग्रन्थ :—

1. हालाँ झालाँ री कुण्डलिया : ईसरदास, सं.डॉ. मोतीलाल मेनारिया, राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर।
2. राजिया रा दूहाः किरपाराम. सं. नरोतनदास स्वामी, प्रकाशक सस्ता साहित्य मण्डल, बीकानेर।
3. राजस्थानी भाषा एवं साहित्य : मोतीलाल मेनारिया, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
4. राजस्थानी भाषा एवं साहित्य का इतिहासः सीताराम लालस, राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर
5. राजस्थानी काव्य की गौरवपूर्ण परम्परा : अगरचन्द नाहटा
6. परम्परा (शोध पत्रिका), राजस्थानी मध्यकाल विशेषांक —राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी जोधपुर।

अतिरिक्त कुलसचिव
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

बी.ए. — चतुर्थ सेमेस्टर (राजस्थानी)

प्रश्न पत्र — **मध्यकालीन राजस्थानी वात (कथा) साहित्य**

1 क्रेडिट — 25 अंक

6 क्रेडिट — 150 अंक

प्रश्न पत्र — 120 अंक

आंतरिक मूल्यांकन — 30 अंक

उदेश्य (Objectives)

- विद्यार्थियों को मध्यकालीन राजस्थानी वात (कथा) की परम्परा एवं विकास की जानकारी प्रदान करना।
- प्रमख वातें एवं उनकी रचनाधर्मिता का परिचय कराना।
- विद्यार्थियों में कल्पनाशक्ति एवं विश्लेषणात्मक योग्यता का विकास करना।
- वात लेखन कला की अभिरुचि विकसित करना।

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome)

- विद्यार्थी मध्यकालीन वात साहित्य के इतिहास की जानकारी ग्रहण कर विचार एवं तर्क शक्ति को विकसित कर सकेंगे।
- वात लेखन एवं उसके प्रभाव का विश्लेषण कर सकेंगे।
- मानव जीवन में व्याप्त हर्ष—विषाद सुख—दुख, जय—पराज, रहस्य—रोमांच एवं कल्पना गत विविध भावों से अनुप्राणित हो सकेंगे।
- आत्माभिव्यक्ति की भावना विकसित हो सकेगी।
- शोध एवं भावी लेखन की पृष्ठभूमि का विकास कर सकेंगे।

अतिरि कुलसचिव

जयपुर

प्रश्न–पत्र का अंक विभाजन

यह प्रश्नपत्र तीन खण्डों (अ, ब, स) में विभक्त है।

- खण्ड–अ के अन्तर्गत प्रश्न संख्या 01 अतिलघुत्तरी प्रश्न है, जिसमें सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से 10 प्रश्न पूछे जाऐंगे। प्रत्येक प्रश्न 02 अंक का होगा।
- खण्ड–ब के अन्तर्गत प्रश्न संख्या 2,3,4,5 सप्रसंग व्याख्या का है. जिसमें इकाई 2 से दो अवतरण तथा इकाई 3 एवं इकाई 4 में निर्धारित पाठ से एक – एक अवतरण आंतरिक विकल्प सहित व्याख्या हेतु पूछे जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का होगा।
- खण्ड–स के अन्तर्गत प्रश्न संख्या 6,7,8,9 निबन्धात्मक प्रश्न हैः जिसमें प्रत्येक इकाई से एक–एक प्रश्न आन्तरिक विकल्प सहित पूछा जाएगा। प्रत्येक प्रश्न 15 अंक का होगा।

इकाई–1

मध्यकालीन राजस्थानी गद्य साहित्य : परम्परा एवं विकास, वात की परम्परा एवं विकास, प्रमुख रखनााएँ एवं विविध प्रवृत्तियाँ

इकाई–2

राजस्थानी वात संग्रह – (सम्पादक डॉ. मनोहर शर्मा एवं श्रीलाल नथमल जोशी प्रकाशक–राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर)

वात संख्या – 2,7,15,21,23,26,29,32,33,37,44,46,48,35,36

वात शीर्षक – 02 सातल सोम री वात, 07 जैसे सरवही मै री वात, 15 हाड़े सूरजमल नारायणदासोत री वात, 21 जगदेव पंवार री वात, 23 रेसांमीयै री वात, 26 रलै गढ़वै री वात, 29 सयणी चारणी री वात, 32 जसमा ओडण री वात, 33 ऊमादे भटियाणी री वात, 37 सांखलै कंवई सी ने भरमल री वात 44 बीजण बीजोगण री वात, 46 देपाळ घंध री वात, 48 अकल री वात, 35 राजा भोज माघ पिंडत अर डोकरी री वात, 36 नाहरी हरणी धरमै कै री वात.

इकाई–3

कहवाट विलास (बडी वात) : (सं.डॉ. सौभाग्यसिंह शेखावत एवं देव कोठारी, साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर)

(मूल पाठ से पृष्ठ संख्या 40 तक)

इकाई–4.

कहवाट विलास (बड़ी वात) : सं. डॉ. सौभाग्यसिंह शेखावत एवं देव कोठारी,

(पृष्ठ संख्या 41 से 80 तक)

आंतरिक मूल्यांकन हेतु किन्ही दो विषयों पर निबध लेखन

(नोट–विषय उपयुक्त पाठ्यक्रम से संबंधित होगें)

संभावित विषय–

- मध्यकालीन राजस्थानी वात की परम्परा एवं विकास।
- मध्यकालीन राजस्थानी गद्य का विकास।
- संकलित वात साहित्य का अर्थ – प्रभाव ग्रहण, विश्लेषण
- संकलित वातों में विचार तत्व एवं शिल्प संयोजन

अनुशंषित ग्रन्थ –

1. राजस्थानी वात संग्रह – सम्पादक डॉ. मनोहर शर्मा एवं श्रीलाल नथमल जोशी, प्रकाशकः राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर.
2. कहवाट विलास – सं. डॉ. सौभाग्यसिंह शेखावत एवं देव कोठारी साहित्य संस्थान राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर
3. राजस्थानी भाषा एवं साहित्य का इतिहासः सीताराम लालस
4. राजस्थानी भाषा एवं साहित्य : डॉ. मोतीलाल मेनारिया
5. राजस्थानी कहानीः परम्परा अर विकासः डॉ. अर्जुनदेव चारण
6. राजस्थानी सब्दकोष : सं. सीताराम लालस, राजस्थानी शोध संस्थान. चौपासनी, जोधपुर,

अति... ...सचिव
...ग्राल... ...

बी.ए. – चतुर्थ सेमेस्टर (राजस्थानी)

प्रश्न पत्र – **मध्यकालीन राजस्थानी वात (कथा) साहित्य**

1 क्रेडिट – 25 अंक

6 क्रेडिट – 150 अंक

प्रश्न पत्र – 120 अंक

आंतरिक मूल्यांकन – 30 अंक

उदेश्य (Objectives)

- विद्यार्थियों को मध्यकालीन राजस्थानी वात (कथा) की परम्परा एवं विकास की जानकारी प्रदान करना।
- प्रमख वातें एवं उनकी रचनाधर्मिता का परिचय कराना।
- विद्यार्थियों में कल्पनाशक्ति एवं विश्लेषणात्मक योग्यता का विकास करना।
- वात लेखन कला की अभिरुचि विकसित करना।

अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome)

- विद्यार्थी मध्यकालीन वात साहित्य के इतिहास की जानकारी ग्रहण कर विचार एवं तर्क शक्ति को विकसित कर सकेंगे।
- वात लेखन एवं उसके प्रभाव का विश्लेषण कर सकेंगे।
- मानव जीवन में व्याप्त हर्ष–विषाद सुख–दुख, जय–पराज, रहस्य–रोमांच एवं कल्पना गत विविध भावों से अनुप्राणित हो सकेंगे।
- आत्माभिव्यक्ति की भावना विकसित हो सकेगी।
- शोध एवं भावी लेखन की पृष्ठभूमि का विकास कर सकेंगे।

प्रश्न–पत्र का अंक विभाजन

यह प्रश्नपत्र तीन खण्डों (अ, ब, स) में विभक्त है।

- खण्ड–अ के अन्तर्गत प्रश्न संख्या 01 अतिलघुत्तरी प्रश्न है, जिसमें सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से 10 प्रश्न पूछे जाऐंगे। प्रत्येक प्रश्न 02 अंक का होगा।
- खण्ड–ब के अन्तर्गत प्रश्न संख्या 2,3,4,5 सप्रसंग व्याख्या का है. जिसमें इकाई 2 से दो अवतरण तथा इकाई 3 एवं इकाई 4 में निर्धारित पाठ से एक – एक अवतरण आंतरिक विकल्प सहित व्याख्या हेतु पूछे जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का होगा।
- खण्ड–स के अन्तर्गत प्रश्न संख्या 6,7,8,9 निबन्धात्मक प्रश्न है: जिसमें प्रत्येक इकाई से एक–एक प्रश्न आन्तरिक विकल्प सहित पूछा जाएगा। प्रत्येक प्रश्न 15 अंक का होगा।

इकाई–1

मध्यकालीन राजस्थानी गद्य साहित्य : परम्परा एवं विकास, वात की परम्परा एवं विकास, प्रमुख रखनााएँ एवं विविध प्रवृत्तियाँ

इकाई–2

राजस्थानी वात संग्रह – (सम्पादक डॉ. मनोहर शर्मा एवं श्रीलाल नथमल जोशी प्रकाशक–राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर)

वात **संख्या** – 2,7,15,21,23,26,29,32,33,37,44,46,48,35,36

वात शीर्षक – 02 सातल सोम री वात, 07 जैसे सरवही मै री वात, 15 हाडे सूरजमल नारायणदासोत री वात, 21 जगदेव पंवार री वात, 23 रेसांमीयै री वात, 26 रलै गढ़वै री वात, 29 सयणी चारणी री वात, 32 जसमा ओडण री वात, 33 ऊमादे भटियाणी री वात, 37 सांखलै कंवई सी ने भरमल री वात 44 बीजण बीजोगण री वात, 46 देपाळ घंध री वात, 48 अकल री वात, 35 राजा भोज माघ पिंडत अर डोकरी री वात, 36 नाहरी हरणी धरमै कै री वात.

इकाई–3

कहवाट विलास (बडी वात) : (सं.डॉ. सौभाग्यसिंह शेखावत एवं देव कोठारी, साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर)

(मूल पाठ से पृष्ठ संख्या 40 तक)

Ri Jain
अतिरिक्त कुलसचिव
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

इकाई–4.

कहवाट विलास (बड़ी वात) : सं. डॉ. सौभाग्यसिंह शेखावत एवं देव कोठारी,

(पृष्ठ संख्या 41 से 80 तक)

आंतरिक मूल्यांकन हेतु किन्ही दो विषयों पर निबध लेखन

(नोट–विषय उपयुक्त पाठ्यक्रम से संबंधित होगे)

संभावित विषय–

- मध्यकालीन राजस्थानी वात की परम्परा एवं विकास।
- मध्यकालीन राजस्थानी गद्य का विकास।
- संकलित वात साहित्य का अर्थ – प्रभाव ग्रहण, विश्लेषण
- संकलित वातों में विचार तत्व एवं शिल्प संयोजन

अनुशंषित ग्रन्थ –

1. राजस्थानी वात संग्रह – सम्पादक डॉ. मनोहर शर्मा एवं श्रीलाल नथमल जोशी, प्रकाशकः राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर.
2. कहवाट विलास – सं. डॉ. सौभाग्यसिंह शेखावत एवं देव कोठारी साहित्य संस्थान राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर
3. राजस्थानी भाषा एवं साहित्य का इतिहासः सीताराम लालस
4. राजस्थानी भाषा एवं साहित्य : डॉ. मोतीलाल मेनारिया
5. राजस्थानी कहानीः परम्परा अर विकासः डॉ. अर्जुनदेव चारण
6. राजस्थानी सब्दकोष : सं. सीताराम लालस, राजस्थानी शोध संस्थान. चौपासनी, जोधपुर,

अतिरिक्त कुलसचिव